

200 years of Kittur Vijayotsava

Kittur, formerly known as 'Geejaganahalli' became renowned as the seat of power for the Kittur kings between 1585 and 1824 A.D. The principality was founded by brothers Hiremalla Shetty and Chikkamalla Shetty, who were gifted the Kittur area by Adilshahi, the king of Bijapur, in recognition of their valor and service.

Initially, the capital was located in Sampagaon, and Kittur was governed by 12 notable kings, with Allappagouda Desai, Mudimallappagouda Desai, and Mallasarja Desai being the most prominent. Under Allappagouda's rule, Kittur's fort and palace were constructed, establishing it as a significant center.

King Mallasarja (1782-1816 A.D.) brought great fame to Kittur. However, his achievements drew the envy of Baji Rao II, the Peshwa of Pune, who conspired to detain him, leading to Mallasarja's untimely death in 1816. Queen Channamma, his second wife, took on the reins of administration after the death of Shivalinga Rudrasarja, the last king.

The Struggle Against British Rule

The British began to interfere in Kittur's administration after Shivalinga's death in 1824. Collector Thackeray's rude conduct and seizure of the treasury sparked Queen Channamma's defiance. On October 23, 1824, in a historic battle, her forces defeated the British, resulting in Thackeray's death at the hands of Amatur Balappa, a brave bodyguard.

However, following negotiations that failed, the British launched a massive attack on Kittur on December 3, 1824. After three days of fierce fighting, the Kittur army was betrayed and ultimately defeated. Queen Channamma was captured and imprisoned at Bailahongal Fort, where she passed away on February 2, 1829. Her indomitable spirit and resistance made her a pioneering figure in India's struggle for independence, earning her the title "Pole Star of Indian Independence."

Legacy of Resistance

Even after her defeat, Queen Channamma's legacy inspired further uprisings. Loyalists like Sangolli Rayanna led significant rebellions against British rule. Despite facing severe reprisals, including executions, their efforts showcased the undying patriotism and courage that characterized Kittur's fight for freedom.

Kittur Palace and Monuments

The Kittur Fort and Palace, built between 1660 and 1691 A.D. during Allappagouda Desai's reign, are architectural marvels, although the British later demolished much of the palace. Today, the ruins provide a glimpse into its grandeur, featuring guest rooms, a Darbar hall, and unique water supply systems, including copper pipes and stone tanks.

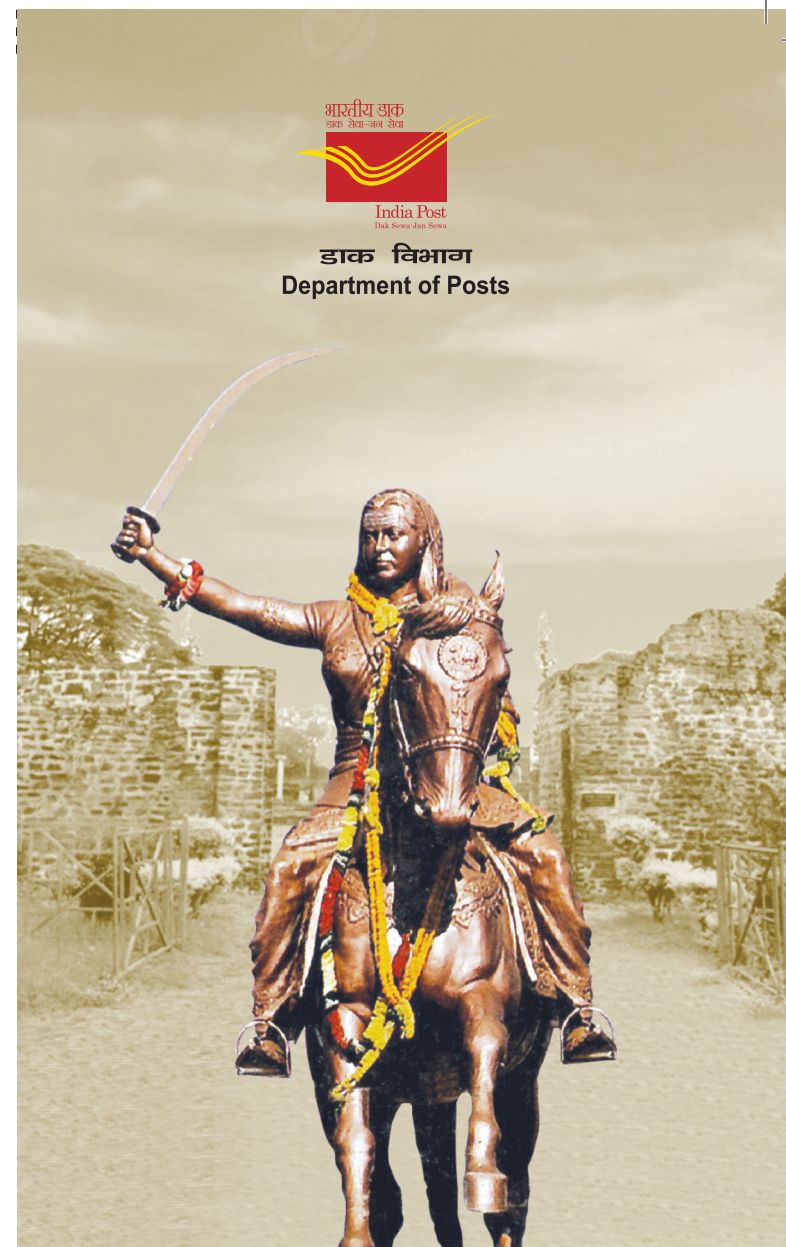
Department of Posts is pleased to issue Commemorative Postage Stamp on 200 years of Kittur Vijayotsava and salutes the legacy of Queen Channamma and her steadfast commitment to freedom.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ : Sh. Brahm Prakash

Cancellation Cachet

Text : Referenced from content provided by Proponent.



कित्तूर विजयोत्सव के 200 वर्ष
200 Years of Kittur Vijayotsava

विवरणिका BROCHURE

किन्नूर विजयोत्सव के 200 वर्ष

पूर्व में 'गीजागानहल्ली' नाम से सुविख्यात किन्नूर सन् 1585 से 1824 ईसवी के बीच किन्नूर राजाओं की राजधानी के रूप में प्रसिद्ध था। इस रियासत की स्थापना हीरमल्ला शेटी और चिक्कमल्ला शेटी नामक दो भाइयों ने की थी, जिन्हें किन्नूर का यह क्षेत्र बीजापुर के आदिलशाही शासक द्वारा उनके शौर्य एवं सेवा के सम्मान स्वरूप उपहार में भेंट किया गया था।

आरंभ में, किन्नूर की राजधानी संपागांव में स्थित थी, और इस पर 12 प्रभावशाली शासकों का शासन रहा, जिनमें अल्लाप्पागौड़ा देसाई, मुदिमल्लप्पागौड़ा देसाई और मल्लसर्ज देसाई सर्वाधिक प्रतिष्ठित रहे। अल्लाप्पागौड़ा के शासन काल में निर्मित किन्नूर का किला और राजमहल ने इस रियासत को एक समृद्ध राज्य के रूप में स्थापित किया।

तत्पश्चात, राजा मल्लसर्ज (1782–1816 ई.) के दौर में किन्नूर की ख्याति और भी अधिक बढ़ने लगी। तथापि, उनकी ये उपलब्धियाँ पुणे के पेशवा बाजी राव द्वितीय की ईर्ष्या का कारण बनीं और उन्होंने राजा मल्लसर्ज को हिरासत में ले लिया। दुर्भाग्यवश, इस दौरान वर्ष 1816 में राजा मल्लसर्ज की असामयिक मृत्यु हो गई। राजा की मृत्यु के बाद उनके पुत्र शिवलिंग रुद्रसर्ज ने शासन की बागडोर संभाली किन्तु उनकी भी कुछ ही दिनों में मृत्यु हो गई। इस प्रकार राज्य का समस्त उत्तरदायित्व रानी चेन्नमा के कंधों पर आ गया।

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष

वर्ष 1824 में राजा शिवलिंग की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने किन्नूर के प्रशासन में हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। अंग्रेज कलेक्टर थेकरी के अभद्र व्यवहार और राजकोष को जब्त करने के उसके दुस्साहस का रानी चेन्नमा ने प्रचंड विरोध किया। 23 अक्टूबर, 1824 के उस ऐतिहासिक युद्ध में, रानी की सेनाओं ने अंग्रेजों को बुरी तरह पराजित कर दिया और अंत में जॉन थेकरी को रानी के बहादुर अंगरक्षक अमातुर बलप्पा के हाथों अपनी जान गंवानी पड़ी।

तथापि, तत्पश्चात हुई वार्ता के विफल हो जाने के बाद, अंग्रेजों ने 3 दिसंबर, 1824 को किन्नूर पर एक और भीषण हमला कर दिया। तीन दिन तक चले इस भयंकर युद्ध में, किन्नूर की सेना भीतरघात

का शिकार हुई और उसे पराजय का सामना करना पड़ा। रानी चेन्नमा को बंदी बनाकर बेलहोंगल किले में कैद कर लिया गया, जहाँ 2 फरवरी, 1829 को उनकी मृत्यु हो गई। चेन्नमा के अदम्य साहस और जुझारूपन ने उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित कर दिया और “भारतीय स्वतंत्रता का ध्रुव तारा” के रूप में ख्याति प्रदान की।

संघर्ष की विरासत

पराजय के बावजूद भी, रानी चेन्नमा का बलिदान तमाम विद्रोहों को प्रेरित करता रहा। संगोली रायन्ना जैसे उनके विश्वासपात्रों ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रभावशाली विद्रोह का नेतृत्व किया। नृशंस दमन और उत्पीड़न और यहाँ तक की फाँसी की सजा भी उन वीरों के जज्बे को डिगा न सकी। उनकी यही अटूट देशभक्ति और साहस की गाथा किन्नूर के स्वतंत्रता संग्राम का प्रतीक बनकर उभरी।

किन्नूर का राजमहल और स्मारक

अपनी अप्रतिम वास्तुकला के लिए सुविख्यात किन्नूर का किला और राजमहल का निर्माण सन् 1660 से 1691 ईसवी के बीच अल्लप्पागौड़ा देसाई के शासनकाल में किया गया। तथापि, कालांतर में अंग्रेजों ने इस महल के अधिकांश हिस्से को ध्वस्त कर दिया। इसके बावजूद भी, इस महल के भव्य खंडहर इसके वैभवशाली अतीत की शानदार झलक प्रकट करते हैं। महल के अतिथि कक्ष, दरबार हॉल और तांबे के नलों तथा पत्थर की टंकियों से सुसज्जित इसकी अनूठी जल आपूर्ति प्रणाली किसी आश्चर्य से कम नहीं हैं।

डाक विभाग किन्नूर विजयोत्सव के 200 वर्ष पूरे होने पर स्मारक डाक टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है और रानी चेन्नमा की समृद्ध विरासत तथा स्वतंत्रता के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता को नमन करता है।

आभार:

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/

: ब्रह्म प्रकाश

विवरणिका/विरूपण कैशे

पाठ

: प्रस्तावक द्वारा प्रदत्त सामग्री
से संदर्भित

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	: 500 पैसे
Denomination	: 500 p
मुद्रितडाक—टिकटें	: 303850
Stamps Printed	: 303850
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।
© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00